Knowledgeable Research Vol. 1, No. 12, July 2023. ISSN 2583-6633

Knowledgeable Research Vol-1, No-12, *July 2023*
An International Open-access Peer-reviewed Journal **Web:** http://www.knowledgeableresearch.com/

औपनिषदीय शिक्षा के प्राचीन भारतीय प्रमुख विश्वविद्यालय

डॉ0 अन्जू गंगवार

सी0एम0जे0विश्वविद्यालय

शिलांग मेधालय

ईमेल : di.kishan1792@gmail.com

****

शोध संदर्भ

प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली में गुरुकुल शामिल थे, जहाँ छात्र स्थायी रूप से आचार्य के संरक्षण में रहते थे। उपनयन संस्कार के बाद आचार्य विद्यार्थियों को प्रवेश देते थे और उनके भोजन, वस्त्र तथा निवास का प्रबंध करते थे। गुरुकुलों में सभी वर्णों, जातियों और वर्गों के बच्चों को प्रवेश की अनुमति दी जाती थी, जिससे ज्ञान और विकास को बढ़ावा मिलता था।

Keywords: प्राचीन भारत, शिक्षा प्रणाली, गुरुकुल, संरक्षण

****

प्राचीन भारत में शिक्षा पद्धति मुख्य रूप से गुरूकुल के रूप में विकसित हुई थी। छात्र वहाँ स्थायी रूप में आचार्य और गुरू की संरक्षा में रहते थे। उपनयन संस्कार करने के बाद आचार्य उस बालक को शिक्षाणालय में प्रवेश कर लेते थे। वे ही छात्र के भोजन वस्त्र, निवास की उचित व्यवस्था करते थे। छात्रों की समस्त व्यवस्था आवार्य द्वारा ही की जाती थी।

सामान्यतः इन गुरुकुल में सभी वर्णों, जातियों और वर्गों के बालकों के प्रवेश की अनुमति थी। ज्ञान की पिपासा के अनुकूल ही आचार्य उसको गुरुकुल में प्रविष्ट होने की अनुमति देते थे।

प्राचीन साहित्य का अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि छोटे–छोटे गुरुकुल और अन्य शिक्षण संस्थाओं के साथ–साथ विशाल गुरूकुल की स्थापना होने लगी थी। ये आजकल के विश्वविद्यालय के समान ही थे। महाभारत युद्ध के पश्चात् अतयन्त विशाल केन्द्रीय विद्यालयों का विकास हुआ। यहाँ न एकमात्र स्थानीय छात्र ही विद्याध्ययन के लिये

Knowledgeable Research Vol. 1, No. 12, July 2023. ISSN 2583-6633

प्रवेश करते थे अपितु सम्पूर्ण भारत से और विदेशों से भी आये हुये ज्ञानार्थी छात्र यहाँ शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते थे। कुछ प्रसिद्ध शिक्षा संस्थाओं का विवरण इस प्रकार है–

(1) तक्षशिला – तक्षशिला विश्वविलयस की स्थिति वर्तमान समय के पाकिस्तान की राजधानी रावलपिंडी से 30 किलोमीटर उत्तर–पश्चिम दिशा में थी। प्राचीन भारत में यह स्थान महिमाशाली शिक्षा केन्द्र के रूप में जाना जाता था। अपने उत्कर्ष काल में तक्षशिला जों गंधार जनपद की राजधानी थी। एतिहासिक परम्पराओं के अनुसार राम ने अपने भाई भरत के पुत्र तक्ष को इस जनपद का शासक नियुक्त किया था। अतः इस नगरी का नाम तक्षशिला प्रसिद्ध हुआ। 1 तक्ष ने यहाँ एक महान विद्या–केन्द्र की स्थापना की। महाभारत काल में भी तक्षशिला विश्वविद्यालय बहुत प्रसिद्ध था। जनमेजय ने इस स्थान पर यज्ञ किया था। 2

तक्षशिला विश्वविद्यालय के प्रसिद्धि विभिन्न विषयों के लिए थी। इनमें वेद, वेदांग, अष्टादश पुराण, शिल्प व्याकरण और दर्शन प्रमुख विषय थे। कुछ विषयों के अध्ययन के लिए तक्षशिला विश्वविद्यालय को पर्याप्त ख्याति प्राप्त थी। इनमें आयुर्वेद, धर्मशास्त्र, दंडनीति और धनुर्विद्या की शिक्षा का विशेष महत्व था।

(2) नालंदा–प्राचीन काल में नालंदा विश्व का सर्वश्रेष्ठ महान् शिक्षा केन्द रहा था। पहले यहाँ बिहार बने थे। जिनकी स्थापना सम्राट अशोक ने कराई थी। चतुर्थ–पंचम शताब्दी ई0 में गुप्त सम्राटों ने कराई थी।

नालन्दा विश्वविद्यालय का पुस्तकालय अत्यन्त विशाल था। उसके द्वारा हजारों छात्रों और अध्यापको के ज्ञान की पिपासा की पूर्ति होती थी। नालंदा विश्वविद्यालय के पुस्तकालय क्षेत्र का नामकरण हुआ था – धर्मगज। पुस्तकालयों में प्रतिलिपि करने की भी सुविधायें प्राप्त थीं।

(3) **वाराणसी** –

वैदिक ज्ञान और विषय विषयों के अध्ययन के लिए वाराणसी का नाम भारत वर्ष में विख्यात रहा है। वरूणा और गंगा के संगत मध्य में स्थित वाराणसी (काशी) का

Knowledgeable Research Vol. 1, No. 12, July 2023. ISSN 2583-6633

नाम शिक्षा के क्षेत्र में वैदिक संहिताओं ब्राह्मण साहित्य और आरण्यकों में वर्णित नहीं है। किन्तु उपनिषदों में वाराणसी को शिक्षा केन्द्र के रूप में महत्व मिलने लगा था।

बौद्ध धर्म के उत्कर्ष के युग में काशी को विद्या केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठा मिलने लगी थी। बौद्ध धर्म के प्रसार के साथ–साथ काशी में शिक्षा के उत्कृष्ट कोटि के केन्दों की स्थापना होने लगी थी। बौद्धों ने काशी के बाहर विहार बनवाये तथा इसको विद्याा केन्द्र के रूप में विकसित किया ब्राह्माण हिन्दू शिक्षा पद्धती का विकास काशी में विमल रूप में हुआ था। किन्तु उत्तरकालीन युग में काशी का गौरव बहुत अधिक हो गया था। पुराणों में वरूण और उसी (गंगा) की धाराओं के मध्य में बसी काशी (वाराणसी) को धार्मिक महत्व प्रदान कर भगवान शिव की नगरी धोंषित किया। 3

संस्कृत की प्राचीन का उल्लेखों से यह स्पष्ट होता है कि पढने के लिये छात्रों को काशी जाना बहुत रूचिकर होता था। वहाँ से स्नातक होने वाले स्नातकों का बहुत अणिक सम्मान था।

(4) विक्रमशील –

भारतवर्ष के प्राचीन विश्वविद्यालयों में **(विक्रमशिला)** विश्वविद्यालय अधिक प्रसिद्ध रहा। इसकी स्थापना लालंदा विश्वविद्यालय की तरह हुई थी। विक्रशिला विश्वविद्यालय की स्थापना बंगाल के पानलवी वंश राजा धर्मपाल (775–800 ई0) नं बौद्ध विहार के रूप में किया था। धर्मपाल ने इसको एक विद्या केन्द्र के रूप में विकसित किया था और इसके लिये बहुत धन दिया था। विक्रमशिला विश्वविद्यालय गंगा के तट पर वर्तमान समय में भागलपुर से 24 मील दूर एक ऊँचं टीले पर अवस्थित है।

विक्रमशिला विश्वविद्यालय में अध्ययन तथा प्रबन्ध की स्थापना अध्यापकों की एक समिति करीह थी। वे ही सारे प्रबन्ध के लिए उत्तरदायी होते थे। विक्रमशील विश्वविद्यालय का पाठ्यक्रम अत्यन्त व्यवस्थित था। किन्तु यह नालंदा विश्वविद्यालय के सदृश अत्यन्त विस्तृत एवं उदार नहीं था। बौद्ध धर्म और दर्शन के साथ ही साथ यहाँ मुख्य रूप से न्याय तत्वज्ञान, तंत्र और कर्मकाण्ड के अध्ययन की भी व्यवस्था थी। यहाँ का पुस्तकालय भी अत्यन्त विशाल था। समावर्तन संस्कार के समय यहाँ बंगाल के राजा द्वारा उपाधि और प्रमाणपत्र भेजे जाते थे।

Knowledgeable Research Vol. 1, No. 12, July 2023. ISSN 2583-6633

(5) उड्डयतपुर–

नालंदा और विक्रमशील की तरह यह भी विख्यात विश्वविद्यालय था एक बौद्ध विहार के रूप में इसकी स्थापना हुई थी। पाल वंश के प्रवर्तक प्रथम राजा गोपाल ने इसको स्थापित किया था। इतिहासवेत्तओं के अनुसार उड्डयतपुर विश्वविद्यालय को अस्तित्व पाल वंश राजाओं सें भी पूर्व विद्यमान था। पालवंश के राजाओं ने यहाँ अत्यन्त उत्तम, उत्कृष्ट पुस्तकालय स्थापित किया। इसमें ब्राह्मण और बौद्ध दोनों के धर्मों और संस्कृतियों से सम्बन्धित पुस्तकें उपलब्ध थीं।

(6) बल्लभी –

भारतवर्ष के प्राचीन विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा नालंदा विश्वविद्यालय के समान थी। अपनी शिक्षा को पूर्ण एवं सम्मान करने के लिये भारतवर्ष के कोने–कोने से विद्यार्थी यहाँ विद्यार्जन करने के लिये आते थे। उस युग में पांडित्य की प्रतिष्ठा तभी प्राप्त होती थी। जब इसको बलभी विश्वविद्यालय के आचार्यों ने प्रमाणित कर दिया हो।

(7) जगद्दल –

बंगाल के पालवी राजा रामपाल (1084–1130) ने एक नवीन रामावती की स्थापना की थी। यह गंगा और करतोया नदियों के संगम पर स्थित था। उसने यहाँ जगद्दल नामक विहार को बनवाया। यह विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हुआ।

(8) मिथला – अति प्राचीन काल से शिक्षा के क्षेत्र में मिथलार का महत्व और गौरव रहा था। उपनिषदों में कहा गया है कि मिथला विद्या का महान केन्द्र है। रामायण और महाभारत के रूप में रही है।

(9) बेलगाम –

प्राचीन शिक्षा– संस्थाओं के इतिहास में मैसूर (कर्नाटक) राज्य के बेलगाम का नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है। प्राचीन अभिलेखों के प्रमुख विष थे– चार वेद, उनके अंग और उपांग, मींमासा, लोकायत, बौद्ध, सांख्य और दर्शन, अन्य शास्त्र और आगम, 18 स्मृतियों, पुराण, काव्य और नाटक।

Knowledgeable Research Vol. 1, No. 12, July 2023. ISSN 2583-6633

बेलगाम में चिकित्साविज्ञान के लिये भी महान् केन्द्र था। 1158 में वहाँ तीन प्रसिद्ध चिकित्सा केन्द्र थे। कोडियम मठ के चिकित्सा केन्द्र में सभी प्रकार के लिऐ उचित व्यवस्था थी।

सन्दर्भ

1. ईशादास्यमिद सर्व यक्तिच जगत्या जगत। तेल त्यक्तेन मुजीथा मा गृघ कस्य स्विद्धनम्।। ई0 1।।
2. असूर्या नराम ते लोका अन्धेन तमसाऽऽवृता। तास्ते प्रेत्याभिभच्छति ये के चात्मनोजना।। ई0 3।।
3. अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्यागुपासते। तातो भूते तमो य उ विद्यायोरता।। ई0 12।।